

# केन्द्रीय विद्यालय अल्हीलाल



निपुण समाचार पत्रिका 2026-27

द्वितीय तिमाही (जुलाई से सितंबर)

"नन्हे कदम, ऊँची उड़ान;  
सीखने-सिखाने का नया कीर्तिमान।"



## प्राचार्य का संदेश

प्रिय विद्यार्थियो, शिक्षक गण एवं आदरणीय अभिभावक गण,

मुझे आपको यह बताते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व हो रहा है कि **केंद्रीय विद्यालय अल्हीलाल** के प्राथमिक विभाग की गतिविधियों , रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए हम द्वितीय तिमाही की '**निपुण पत्रिका**' का विमोचन करने जा रहे हैं। यह पत्रिका हमारे नन्हे बच्चों के बहुमुखी विकास, उनकी अद्वितीय प्रतिभा और विद्यालय परिसर में होने वाले नवीन प्रयासों का एक सजीव दर्पण है।

यह पत्रिका विशेष रूप से हमारे प्यारे बच्चों की खेल-कूद , कला, कविता और कहानी जैसी सुंदर कलाकृतियों को एक साझा मंच देने का प्रयास है , जिससे उनका उत्साहवर्धन हो सके। इसके साथ ही , बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमारे कर्मठ शिक्षकों द्वारा कक्षा के भीतर और बाहर किए जा रहे अभिनव प्रयास भी इसमें समाहित हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में अभिभावकों की भागीदारी हमारे लिए अमूल्य है और इस पत्रिका के माध्यम से आप बच्चों के सीखने के सफर को करीब से देख सकेंगे। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा के इस उत्सव को सफल बनाएं और अपने बच्चों को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करें।

शुभकामनाओं सहित,

**दिनेश कुमार**

**प्राचार्य**

**केंद्रीय विद्यालय अल्हीलाल**

## एक पेड़ माँ के नाम: प्रकृति और माँ को असीम प्यार!



"जिसने सींचा जीवन मेरा, उस माँ को एक उपहार दिया,  
आज लगाकर एक पौधा, धरती का भी श्रृंगार किया।"

## हरी पत्तियाँ, रंग-बिरंगे फूल: प्रकृति की अनूठी रंगोली!



"रंगों से नहीं, हमने तो पत्तों और कलियों से नाता जोड़ा है,  
प्रकृति के सुंदर उपहारों से, आज इस आँगन को सँवारा है।"

## नन्हें हाथों का कमाल: बोया बीज, उगाया जीवन!



"मिट्टी में एक बीज छुपाया, पानी देकर उसे जगाया,  
देखो हमारे नन्हें हाथों ने, एक नया जीवन उगाया।"

## जीवन के सच्चे मित्र: हर रूप में उपयोगी पेड़-पौधे!



"फल देते हैं, छांव देते हैं, जीवनदायिनी साँसें देते हैं,  
बिना मांगे हमसे कुछ भी, पौधे सब कुछ हमें देते हैं।"

## तिनका-तिनका जोड़कर बनाया: सस्टेनेबल सपनों का घर!



"मिट्टी, पत्तों और सूखी टहनियों से एक नया हुनर दिखाया है, पर्यावरण के अनुकूल, हमने अपने सपनों का घर बनाया है।"

## तिरंगे की शान, बच्चों की मुसकान: आजादी का अमृत उत्सव!



### शान हमारी, प्यारा तिरंगा!

अल्हीलाल के आँगन में, देखो आज सवेरा आया है,  
नन्हें-मुन्ने देश भक्तों ने, मिल खुशियों को मनाया है।

तीन रंगों का प्यारा तिरंगा, आज हवा में शान से लहराया है,  
नन्हें-मुन्ने देश भक्तों ने, मिलकर स्वतंत्रता का पर्व मनाया है।

शान से लहराए नभ में, यह तीन रंगों का प्यारा मान,  
वीरों की गाथा गाता है, यह पावन सा हिंदुस्तान।

कदम मिलाकर बढ़ रहे बच्चे, मन में लेकर एक उमंग,  
शिक्षा और संस्कार सजाकर, बिखेर रहे आज़ादी के रंग।

## मिट्टी की खोज: मिट्टी से यारी, सीखने की कला हमारी!



"हाथों में मिट्टी लेकर हमने, उसकी खुशबू को पहचाना है,  
इसमें छुपे हैं कितने जीव, आज खेल-खेल में जाना है।"

## प्रकृति भ्रमण - पौधों का अवलोकन



"हरी घास और ऊंचे पेड़ों से, आज हमने एक नया पाठ सीखा है,  
किताबों से बाहर निकलकर, प्रकृति को अपनी आँखों से देखा है।"

चेहरे पर मुखौटा, जंगल की सैर: कक्षा में उमड़ा वन्य जीवन!



"कोई बना शेर, कोई भालू, कोई चतुर खरगोश बन आया है,  
पहन मुखौटा जानवरों का, आज कक्षा को हमने जंगल बनाया है।"

## मेरी जुबानी, त्योहारों की कहानी: अभिव्यक्ति का मंच!



"कोई लाया है दिवाली के दीये, तो कोई ईद की सवैयाँ लाया है, अपनी भाषा में सबने, भारत की अनेकता का रंग सजाया है।"

## बंद आँखें, खुली समझ: खुशबू से फलों की पहचान!



"आँखें बंद हैं पर हमारी ज्ञानेंद्रियाँ जाग रही हैं,  
खुशबू से पहचानकर फल की, बच्चे नई समझ बना रहे हैं।"

## कागज़ की जादुई दुनिया: मुड़े पन्ने, खिले सुंदर फूल!



"रंगीन कागज़ों को मोड़-मोड़कर, हमने सुंदर सी कलियाँ बनाई हैं,  
बिना कैंची, बिना गोंद के देखो, कक्षा में कैसी बहार आई है।"

धागों में पिरोया स्नेह: नन्हें हाथों से सजी अनमोल राखी!



"रेशम के धागे, चमकीले सितारे, हमने खुद अपनी राखी को सजाया है, कला के इस प्यारे हुनर से, भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को मनाया है।"

## किताबों की दुनिया में सफर: पढ़ना है मजेदार!



"पन्ने पलटते जाते हैं, हम नई दुनिया में खो जाते हैं,  
कक्षा पुस्तकालय में हम ज्ञान के पंख लगाते हैं।"

## स्वस्थ तन, एकाग्र मन: कक्षा में योग का संगम!



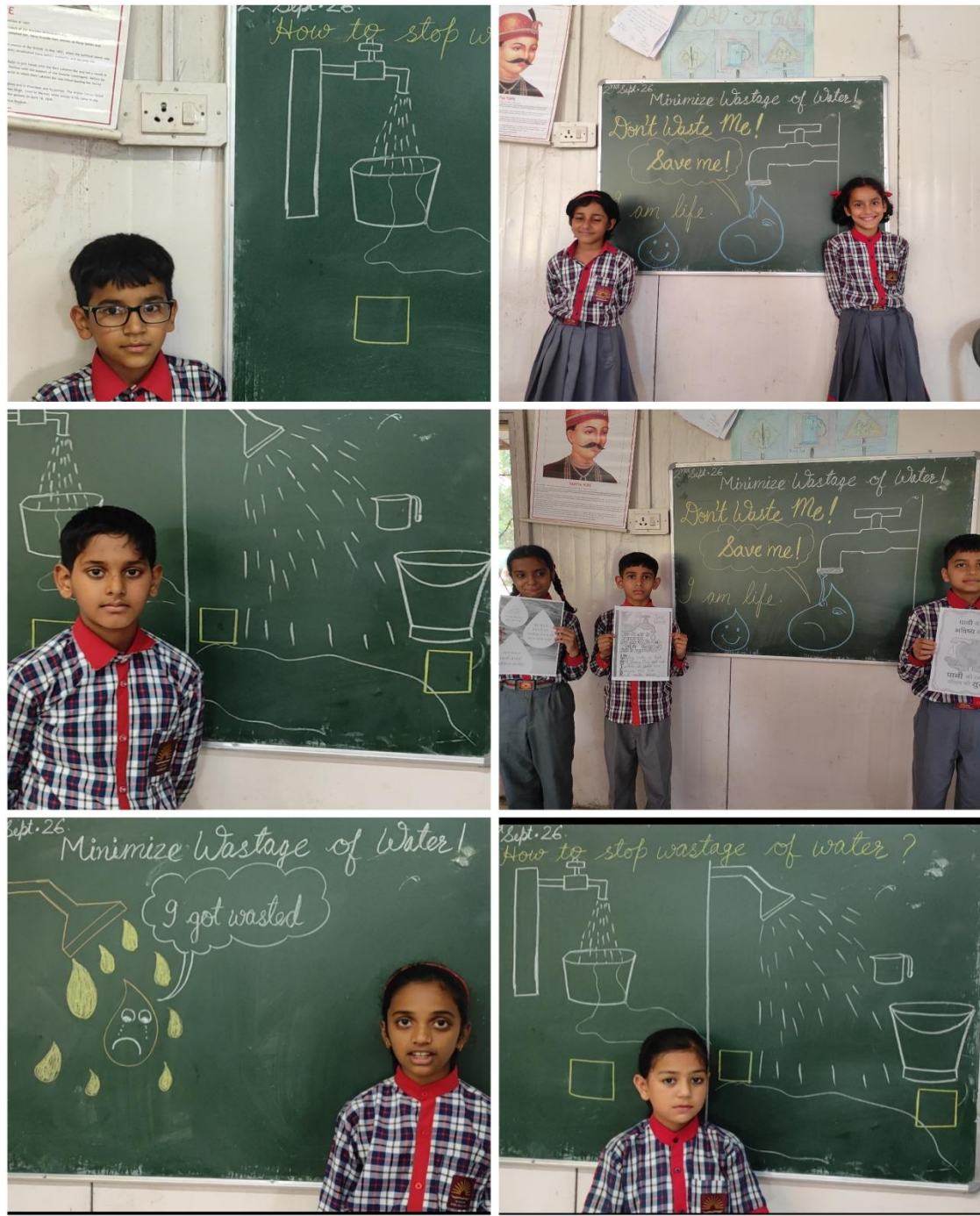
"गहरी साँसें, शांत दिमाग, ध्यान लगाकर बैठेंगे,  
प्राणायाम अपनाकर हम, पढ़ाई में मन लगाएँगे।"

## थाली में पोषण, चेहरे पर मुस्कान: सेहत और स्वाद का सफर!



"स्वाद भी है और सेहत भी, पोषण से भरपूर हमारा थाल है,  
मिलकर खाना, मिलकर बाँटना, हमारे फूड फेस्टिवल का यही कमाल है।"

## बूँद-बूँद में जीवन: जल बर्बादी रोकने का नन्हा संकल्प!



"कक्षा में आज हमने मिलकर, जल की हर बूँद की कीमत जानी है,  
नल को खुला न छोड़ेंगे हम, पानी की असली कीमत पहचानी है।  
आज बनेंगे जल के रक्षक, कल का सुंदर भविष्य सजाएँगे,  
बूँद-बूँद बचाकर धरती की, हम सब 'निपुण' कहलाएँगे।"



**"अक्षर-अक्षर समझें बच्चे, अंकों से भी नाता जोड़ें,  
निपुण बनकर जीवन पथ पर, हर बाधा को पीछे छोड़ें।"**

**संपादन मंडल:**

- **मुख्य संरक्षक:** श्री दिनेश कुमार (प्राचार्य)
- **संपादक व समन्वयक:** समस्त प्राथमिक महिला शिक्षक गण
- **विशेष सहयोग:** समस्त विद्यार्थी एवं अभिभावक गण